IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 5, November 2025
Impact Factor: 7.67

प्रेमशंकर रघुवंशी के काव्य में संवेदना के आयाम

प्रो. (डॉ.) विष्णु कुमार अग्रवाल

प्रोफेसर-हिन्दी विभाग

शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर

श्रीमती गिरजेश ओझा

शोध छात्रा

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

शोध सारांश

मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी गाँव में जन्मे तथा सतपुड़ा एवं नर्मदा के अंचल में पले बड़े कवि प्रेमशंकर रघुवंशी (8 जनवरी 1936 से 2016) ने अपने प्राध्यापकीय जीवन के दौरान अपने अंचल के साथ गहरा रागात्मक सम्बन्ध स्थापित किया। कालांतर में यही रागात्मक संवेदना उनके गीतों और कविता में रूपायित हुई है। प्रकृति से जीवन तादात्म रखते हुए लोक जीवन को जीते हुए और सामान्य जन के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए किसी साहित्यकार या कवि की रचनाधर्मिता किस प्रकार विशिष्ट और ऊर्जावान होती है इसके साक्षात प्रमाण रूप में प्रेमशंकर रघुवंशी का काव्य संसार है। जिसमें संवेदना के विविध आयामों में वैयक्तिक संवेदना, सार्वभौमिक से लेकर राष्ट्र-चिंतनपरक आदि संवेदना का विवेचन करना है।

मुख्य शब्द — संवेदना, प्रेमशंकर रघुवंशी, कविता, सतपुड़ा, नदियाँ, प्रकृति, वैयक्तिक, मानवीय, सामाजिक, आदिवासी, धर्म के सटोरिये, अध्यात्म, राजनीति, सांस्कृतिक, राष्ट्रचिंतन, अभिव्यक्त आदि।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-30059